

To understand pleasure is not to deny it, because pleasure is one of the basic demands of life, like enjoyment. When you see a beautiful tree, a lovely sunset, a nice smile on a face, light on a leaf, then you really enjoy it, there is great delight.	सुख-विलास को समझना उसका परित्याग करना नहीं होता क्योंकि आनंद और लुत्फ की तरह यह भी जीवन की आधारभूत मांग है। जब आप किसी सुंदर वृक्ष को देखते हैं, मनमोहक सूर्यास्त को देखते हैं, किसी चेहरे पर भली सी मुस्कान को देखते हैं, किसी पत्ती पर पड़े प्रकाश को देखते हैं, तब आप उसका आनंद लेते हैं, उससे आप प्रसन्न हो उठते हैं।
— 10 —	- १० -
Do not Bring Thought into It	विचार को इसमें न लाएं
When you see something extraordinarily beautiful, full of life and beauty, you must never let thought come in, because the moment thought touches it, thought being old, it will pervert it into pleasure and, therefore, there arises the demand for pleasure and for more and more of pleasure; and when it is not given, there is conflict, there is fear. So, is it possible to look at a thing without thought?	जब आप असाधारण रूप से सुंदर कोई ऐसी चीज़ देखें जो जीवन और सौंदर्य से परिपूर्ण हो तब आप विचार को कभी न आने दें, क्योंकि ज्यों ही विचार उसे स्पर्श करेगा त्यों ही पुरातन होने के कारण वह इसे मनोसुख में बदल देगा, और तब इस सुख की मांग उठने लगेगी--अधिक और अधिक मात्रा में। और जब वह प्राप्त नहीं हो सकेगा तब द्रुंढ कूद पड़ेगा, भय आ डटेगा। तो, क्या बिना विचार के किसी चीज़ को देखना संभव है?
CHAPTER SIX	अध्याय छः
Why Should We Change?	हम परिवर्तित क्यों हों?
-1-	- १ -
Change, and You Change the World	स्वयं बदलो और तब तुम दुनिया को बदल दोगे
Now to understand the self, which alone can bring about a radical revolution, a regeneration, there must be the intention to understand its whole process. The process of the individual is not opposed to the world, to the mass, whatever that term may mean, because there is no mass apart from you—you are the mass.	स्वयं को समझने के लिये स्वयं की तमाम प्रक्रियाओं को समझना आवश्यक है, क्योंकि स्व की यह समझ ही आमूल परिवर्तन ला सकती है, एक नया जीवन दे सकती है। किसी व्यक्ति की परिवर्तन-प्रक्रिया विश्व के विरुद्ध नहीं होती, जन-समूह के विरुद्ध नहीं होती क्योंकि आपसे पृथक कोई जन-समूह नहीं होता--आप ही जन-समूह हैं।



-2-	- २ -
Why Do We Want to Change?	हम परिवर्तन करना क्यों चाहते हैं?
First of all, why do we want to change what is, or bring about a transformation? Why? Because what we are dissatisfied with; it creates conflict, disturbance; and disliking that state, we want something better, something nobler, more idealistic. So, we desire transformation because there is pain, discomfort, conflict.	हम 'जो है' उसे बदलना या उसका रूपांतरण करना क्यों चाहते हैं? क्यों? क्योंकि हम जो हैं, वह हमें असंतुष्ट करता है इससे द्वंद्व और विक्षोभ उत्पन्न होता है, और इस स्थिति को नापसंद करते हुए हम कुछ बेहतर, कुछ श्रेष्ठतर, कुछ अधिक आदर्शपूर्ण स्थिति चाहते हैं। अब क्योंकि 'जो है' में पीड़ा है, बेचैनी है, द्वंद्व है, अतः हम परिवर्तन चाहते हैं।
-3-	- ३ -
It Is Necessary	यह आवश्यक है
Because when you radically change, you are not changing because of society, you are not changing because you want to do good or you want to reach heaven or God or whatever it is. You are changing because it is necessary for itself. And if you love a thing for itself, then it brings about tremendous clarity, and it is this clarity that is going to bring about salvation to man—not doing good works and reforms.	जब आप मौलिक रूप से बदलते हैं तब आप समाज के कारण नहीं बदल रहे होते और न ही इसलिए कि आप भलाई के काम करना चाहते हैं या स्वर्ग अथवा ईश्वर इत्यादि तक पहुंचना चाहते हैं। आप इसलिए बदलते हैं क्योंकि यह अपने आप में आवश्यक है। जब आप किसी चीज़ को स्वयं उसके लिए प्रेम करते हैं, तब उससे जीवन में अत्यधिक स्पष्टता आती है और यही स्पष्टता मानव का उद्धार करने वाली है, न कि सुधार और भलाई के कार्यकलाप।
— 4 —	- ४ -
Inward, not Outward, Change Transforms Society	बाह्य नहीं, आंतरिक परिवर्तन समाज को बदलता है
There is no end to talking, to arguments, to explanations, but explanations, arguments, and talking do not lead to direct action because for that to take place, we need to change radically and fundamentally. That needs no argument. No convincing, no formula, no being influenced by another will make us change fundamentally, in the deep sense of that word. We do need to change, but not according to any particular idea or formula or concept, because when we have ideas about action, action ceases.	बातें करने, तर्क करने और व्याख्या करने का कोई छोर नहीं होता, वास्तविकता तो यह है कि व्याख्याएं, तर्क और बातें सीधी कार्रवाई की ओर नहीं जाते, क्योंकि उसके लिए तो हमें ही आमूल और आधारभूत रूप से बदलना होता है। उसके लिए किसी तर्क की आवश्यकता नहीं होती। कोई विश्वास दिलाने से, किसी सूत्र-सिद्धांत से, किसी दूसरे के द्वारा डाले जाने वाले किसी प्रभाव से हममें वास्तविक अर्थ में, आधारभूत परिवर्तन नहीं आ सकता। हममें परिवर्तन की आवश्यकता तो है परंतु वह किसी अन्य के विशेष विचार, सूत्र या धारणा के

<p>Between action and idea there is a time interval, a lag, and in that time interval there is either resistance, conformity, or imitation of that idea or that formula and trying to put it into action. That's what most of us are doing all the time. We know we have to change, not only outwardly but deeply, psychologically.</p>	<p>अनुसार नहीं होना चाहिए, क्योंकि कुछ करते समय जब हममें दूसरे के विचार विद्यमान रहते हैं तब वह करना हमारा करना नहीं रह जाता। इस करने और इस विचार के बीच समय का अंतराल रहता है, एक बिलंबन होता है और इस समय-अंतराल में उस विचार के प्रति, उस सूत्र के प्रति या तो प्रतिरोध होता है या अनुसरण या फिर अनुकरण--और होता है इसे कार्य रूप में ले आने का प्रयास। यही तो है जिसे हम सभी अधिकांशतः हर समय करते रहते हैं। हम जानते हैं कि हमें बदलना है, न केवल बाहरी तौर पर बल्कि गहरे तक--मनोवैज्ञानिक रूप से।</p>
<p>The outward changes are many. They are forcing us to conform to a certain pattern of activity, but to meet the challenge of everyday life, there must be deep revolution. Most of us have an idea, a concept of what we should be or what we ought to be, but we never change fundamentally. Ideas, concepts of what one should be do not make us change at all. We only change when it is absolutely necessary, and we never see directly the necessity for change. When we do want to change, there is a great deal of conflict and resistance, and we waste a great deal of energy in resisting, in creating a barrier...</p>	<p>बाह्य परिवर्तन तो बहुत से हैं। वे हमें किसी कार्य प्रणाली के किसी तौर तरीके का अनुसरण करने के लिये बाध्य करते हैं, परंतु दिन-प्रतिदिन के जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए गहन क्रांति की आवश्यकता होती है। हममें से अधिकांश लोगों के पास कोई न कोई पूर्वनिर्धारित विचार या धारणा होती है कि हमें क्या होना चाहिए, परंतु हम कभी बुनियादी तौर से नहीं बदल पाते। हमें क्या होना चाहिए--तत्संबंधी विचार और मनोभाव हममें कोई परिवर्तन नहीं ला पाते। हम तभी बदलते हैं जब यह नितांत आवश्यक हो जाता है, क्योंकि हम परिवर्तन की आवश्यकता को कभी प्रत्यक्षतः नहीं देख पाते। हम कभी बदलना भी चाहते हैं, तो हममें भारी द्वंद्व और प्रतिरोध खड़ा हो जाता है और हम प्रतिरोध करने में, अवरोध खड़े करने में अपनी विपुल ऊर्जा व्यर्थ कर देते हैं ...</p>
<p>To bring about a good society, human beings have to change. You and I must find the energy, the impetus, the vitality to bring about this radical transformation of the mind, and that is not possible if we do not have enough energy. We need a great deal of energy to bring about a change within ourselves, but we waste our energy through conflict, through resistance, through conformity, through acceptance, through obedience. It is a waste of energy when we are trying to conform to a pattern. To conserve energy we must be aware of ourselves,</p>	<p>एक भला समाज बनाने के लिये मानव जाति को स्वयं में बदलाव लाना होगा। मन के इस आमूल परिवर्तन के लिये मुझे ऊर्जा, संवेग और जीवन-शक्ति प्राप्त करनी होगी। पर्याप्त ऊर्जा के बिना यह संभव नहीं है। स्वयं में बदलाव लाने के लिये हमें विपुल ऊर्जा चाहिए, परंतु हम अपनी यह ऊर्जा द्वंद्व, प्रतिरोध, अनुकरण, स्वीकरण और अनुपालन में व्यर्थ गवांते हैं, किसी ढर्रे का अनुकरण करना अपनी ऊर्जा व्यर्थ गवाना है। अपनी ऊर्जा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये हमें स्वयं के प्रति सजग रहना होगा, अपनी ऊर्जा का हम कैसे-कैसे अपव्यय करते हैं इसके प्रति सजग</p>

how we dissipate energy. This is an age-long problem because most human beings are indolent. They would rather accept, obey, and follow. If we become aware of this indolence, this deep-rooted laziness, and try to quicken the mind and the heart, the intensity of it again becomes a conflict, which is also a waste of energy.	रहना होगा। यह युग-युगांतकारी समस्या है, क्योंकि अधिकांशतः मनुष्य अकर्मण्य होते हैं। वे स्वीकार करने, अनुपालन करने और अनुसरण करने को प्राथमिकता देते हैं। यदि हम इस अकर्मण्यता और गहराई तक अपनी जड़ें जमाये हुए आलस्य को जान लें और अपने मन-मस्तिष्क में प्रयासपूर्वक स्फूर्ति ले आएं तो इसकी प्रबलता पुनः एक द्रंद्र बन जाती है और यह भी ऊर्जा का अपव्यय ही है।
Our problem, one of the many that we have, is how to conserve this energy, the energy that is necessary for an explosion, to take place in consciousness--an explosion that is not contrived, that is not put together by thought, but an explosion that occurs naturally when there is this energy that is not wasted...	हमारी अनेक समस्याएं हैं और उनमें से एक है कि ऊर्जा का संरक्षण कैसे किया जाए--उस ऊर्जा का संरक्षण जो चेतना के प्रस्फुटन के लिये आवश्यक होती है--वह प्रस्फुटन नहीं जो सुनियोजित होता है या जो विचार द्वारा रचित एक जुगाड़ होता है, बल्कि वह प्रस्फुटन जो इस ऊर्जा का अपव्यय न किये जाने पर स्वतः घटित हो जाता है...
We are talking about the necessity of gathering all energy to bring about a radical revolution in consciousness itself, because we must have a new mind; we must look at life totally differently.	स्वयं चेतना में एक आमूल क्रांति लाने के लिये संपूर्ण ऊर्जा को एकत्र करने की आवश्यकता पर हम बात कर रहे हैं, क्योंकि हमारे पास एक नूतन मन होना ज़रूरी है; तो, हमें जीवन को एक नितांत भिन्न दृष्टि से देखना होगा।
CHAPTER SEVEN	अध्याय सात
What Is the Purpose of Life?	जीवन का प्रयोजन क्या है
-1-	- 9 -
What Is the Purpose of Life?	क्या है जीवन का प्रयोजन?
The significance of life is living. Do we really live, is life worth living when there is fear, when our whole life is trained in imitation, in copying? In following authority is there living? Are you living when you follow somebody, even if he is the greatest saint or the greatest politician or the greatest scholar?	जीवन की सार्थकता जीने में है। जब हम भयग्रस्त रहते हैं, जब हमारा सारा जीवन अनुकरण करने के लिए, नकल करते रहने के लिए ढाल दिया गया हो तब हम क्या वास्तव में जी रहे होते हैं, तब क्या वह जीवन जीने योग्य रहता है? किसी प्रामाण्य रूप में स्थापित व्यक्ति का अनुगमन करते जाना क्या जीवन जीना है? जब हम किसी के पिछलग्गू बने हुए हों, चाहे वह बड़े से बड़ा संत हो, राजनेता हो या विद्वान हो, तब क्या हम जी रहे होते हैं

